इकाई ६

शहरीकरण एवं शहरी जीवन

शहरीकरण का अर्थ है किसी गॉव का शहर या कस्बे के रूप में विकसित होने की प्रक्रिया। गॉव और शहर के बीच काफी भिन्नताएँ हैं । गॉव की आबदी कम होती है नगर की ज्यादा; गॉव में खेती और पशुपालन मुख्य आजीविका है, शहर में व्यापार और उत्पादन, गॉव में प्राकृतिक वातावरण स्वच्छ है, शहर में प्रदूषित । शिक्षा, यातायात, स्वास्थ्य सुविधाएँ आदि में शहर अधिक उन्नत अवस्था में होती है। गॉव से शहरों का विकास एक वृहत प्रक्रिया है जो कई शताब्दियों पर फैली है । समाजशास्त्री के अनुसार नगरीय जीवन तथा आधुनिकता एक-दूसरे के पूरक है और शहर को आधुनिक व्यक्ति का प्रभाव क्षेत्र माना जाता है । शहर व्यक्ति को सन्तुष्ट करने के लिए अंतहीन संभावनाएँ प्रदान करता है । आधुनिक काल से पूर्व व्यापार एवं धर्म शहरों की स्थापना के महत्वपूर्ण आधार थे। ऐसे वे क्षेत्र थे जो मुख्य व्यापार मार्ग अथवा पत्तन और बन्दरगाहों के किनारे बसे थे । कुछ ऐसे क्षेत्र थे जो धार्मिक स्थल के रूप में भारी संख्या में भक्तों को आकर्षित करते थे तथा ये धार्मिक स्थल नगर अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ भी करते थे ।

मध्यकालीन सामंती सामाजिक संरचना एवं मध्यकालीन जीवन मूल्य तेरहवीं शताब्दी तक अपने शिखर पर थे । कई प्रतिरोध के पश्चात् भी यह व्यवस्था लगभग सोलहवीं शताब्दी तक बनी रही । इस व्यवस्था ने नई एवं बाह्य शक्तियों को जो इसे परिवर्तित करना चाहती थी यथासंभव नियंत्रित रखा, रोका और अपने में समाहित किया । अंततः एक नई सामाजिक एवं राजनीतिक संरचना विकसित हुई, जो अपनी परम्पराओं एवं स्वरूप के लिए प्राचीन परिपाटी के प्रति ऋणी तो थी किन्तु नवीन राजनीतिक एवं आर्थिक अवधारणाओं को स्वीकार करती थी जो अधिक लौकिक थी एवं जिज्ञासु प्रवृति से प्रेरित थी ।

इसी पृष्ठभूमि में शहरी जीवन का पुनः उदय हुआ । कालांतर में ऐसे शहरों का विस्तार हुआ जिसमें भव्य परकोटों का निर्माण हुआ। ये शहर तथा इनके व्यस्त उद्यमी नागरिक भविष्य

© NCERT not to be republished

के दृष्टिगोचर एवं अग्रदूत थे । ये शहर नये राजमार्गों से जोड़े गये तथा इनके बीच सड़क एवं जलमार्गों द्वारा व्यापार होने लगा ।

शहरीकरण की प्रक्रिया बहुत लम्बी रही है लेकिन आधुनिक शहर के उदय का इतिहास लगभग दो सौ वर्ष पुराना है । तीन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं ने आधुनिक शहरों की स्थापना में निर्णायक भूमिका निभाई । पहला, औद्योगिक पूंजीवाद का उदय, दूसरे, विश्व के विशाल भूभाग पर औपनिवेशिक शासन की स्थापना और तीसरा लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास।

इस तरह ग्रामीण एवं सामंती व्यवस्था से हटकर एक प्रगतिशील शहरी व्यवस्था की ओर बढ़ने की प्रवृति बढ़ी । अत: नगरवाद, जनसमूह के एक बड़े भाग की जीवन पद्धति के रूप में आधुनिक घटना है ।

एक स्थायी सामाजिक जीवन की शुरुआत गॉव से हुई । इस संक्रमण की प्रक्रिया में जहॉ खानाबदोशी जीवन की पद्धति थी, जिसकी विशेषता शिकार, भोजन संकलन तथा अस्थायी कृषि पर आधारित थी, उसके स्थान पर स्थानीय कृषि को प्रारंभ किया गया ।

भूमि निवेश तथा तकनीकी खोजों ने कृषि में अतिरिक्त उत्पादन की संभावना को जन्म दिया जो उसके सामाजिक अस्तित्व के लिए अपरिहार्य है । अत: स्थायी कृषि के प्रभाव से संपत्ति का जमाव संभव हुआ जिसके कारण सामाजिक विषमताएँ भी आई । अत्यधिक उच्चश्रम विभाजन ने व्यावसायिक विशिष्टता की आवश्यकता को जन्म दिया । इन परिवर्तनों के आधार पर ग्रामीण जीवन के उद्‌भव को एक आधार मिला जहॉ लोगों का निवास एक विशिष्ट प्रकार के सामाजिक संगठन पर आधारित था ।

आर्थिक तथा प्रशासनिक संदर्भ में ग्रामीण तथा नगरीय व्यवस्था के दो मुख्य आधार हैं। जनसंख्या का घनत्व तथा कृषि आधारित आर्थिक क्रियाओं का अनुपात । अत: शहरों तथा नगरों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है । अथवा प्रति इकाई क्षेत्र में लोगों की संख्या की दृष्टि से वे छोटे होते हैं । शहरों तथा नगरों से गॉव को उनके आर्थिक प्रारूप में कृषिजन्य क्रियाकलापों में एक बड़े भाग के आधार पर भी अलग किया जाता है । दूसरे शब्दों में गॉवों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कृषि संबंधी व्यवसाय से जुड़ा है । अधिकांश वस्तुएँ कृषि उत्पाद ही होती है जो इनकी आय का प्रमुख स्रोत होता है । अत: एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था मूलत: जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था की अवधारणा पर आधारित थी । ऐसे वर्ग का नगरों की ओर बढ़ना एक गतिशील मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था के आधार पर संभव हुआ जो प्रतियोगी था एवं एक उद्यमी प्रवृति से प्रेरित

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

था । इसी सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के आधार पर प्रवजन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई । भारी संख्या में कृषक वर्ग ग्रामीण क्षेत्रों से निकल कर शहरों की ओर नए अवसर की तलाश में बढ़े । प्रारम्भ में शहरों के बसने में इनका अभिन्न योगदान रहा । परन्तु शहरी व्यवस्था के अन्तर्गत यह तब भी उपेक्षित वर्ग रहे जिसने सामाजिक भेदभाव की भावना को बनाये रखा । इस दिशा में बढ़ते हुए आधुनिक शहरों का विकास हुआ जिसमें शहरी जीवन की ओर रुझान बढ़ा । यह ऐसी प्रक्रिया है जहॉ क्रमशः नगरीय जनसंख्या का बड़े से बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरों में बसने लगा। शहरों के आकार और जटिलता में भी अन्तर उत्पन्न हुआ । राजनीतिक प्राधिकार का केन्द्र प्रायः शहर बन गये जहॉ दस्तकार, व्यापारी और अधिकारी बसने लगे ।

आधुनिक काल में औद्योगीकरण ने शहरीकरण के स्वरूप को गहन रूप से प्रभावित किया। औद्योगिक क्रांति की शुरुआत होने के कई दशक बाद तक भी अधिकतर पश्चिमी शहर मोटे तौर पर ग्रामीण किस्म के शहर ही थे ।

शहरों के विकासक्रम की ओर दृष्टि डाली जाये तब उनके विकास की प्रक्रिया को कस्बों के रूप में प्रारंभ होते हुए देखा जा सकता है । जहॉ कस्बों में शिल्पकार, व्यापारी, प्रशासन तथा शासक रहते थे । कस्बों का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव था जिसे यह करो और अधिशेष के प्राप्ति के आधार पर स्वयं को मजबूत करते थे । अधिकांशतः कस्बों और शहरों की किलाबंदी की जाती थी जो ग्रामीण क्षेत्रों से इनकी पृथकता को चिन्हित करती थी ।

कस्बा–ग्रामीण अंचल में एक छोटे नगर को माना जाता है जो अधिकांशतः स्थानीय विशिष्ट व्यक्ति का केन्द्र होता है ।

गंज–एक छोटे स्थायी बाजार को कहा जाता है । कस्बा और गंज दोनों कपड़ा, फल, सब्जी, तथा दूध उत्पादों से संबद्ध थे । विशिष्ट परिवारों तथा सेना के लिए सामग्री उपलब्ध कराते थे।

अठारहवीं शताब्दी में राजनीतिक तथा व्यापारिक पुनर्गठन के साथ पुराने नगर पतनोन्मुख हुए और नये नगरों का विकास होने लगा । शहर घनी आबादी वाले आधुनिक प्रकार के महानगर होने लगे जहॉ एक पूरे क्षेत्र के राजनीतिक व आर्थिक कामों को देखा जाता है और उनकी आबादी बहुत बड़ी होती है ।

इंग्लैंड–औद्योगीकरण ने शहरीकरण के स्वरूप को गहन रूप से प्रभावित किया। फिर भी 1850 ई. तक अधिकांश पश्चिमी शहर लगभग ग्रामीण किस्म के शहर ही थे । लीड्स और

© BSTBPC FREE COPY NOT TO BE PUBLISHED

मैनचेस्टर जैसे प्रारंभिक औद्योगिक शहर अठारहवीं शताब्दी के अंत में स्थापित किये गये। कपड़ा मिलों के कारण प्रवासी मजदूर शहरों की ओर भारी संख्या में आकर्षित हुए। 1851 में मैनचेस्टार में रहने वाले तीन चौथाई से अधिक लोग ग्रामीण इलाकों से आए प्रवासी मजदूर थे ।

1750 ई. तक इंग्लैंड और वेल्स का हर नौ में से एक आदमी लन्दन में रहता था। यह एक महाकाय शहर था जिसकी आबादी 6,75,000 तक थी । उन्नीसवीं शताब्दी में भी लंदन के विस्तार की प्रक्रिया जारी रही । 1810 से 1880 ई. तक उसकी आबादी की संख्या 10 लाख से बढ़कर 40 लाख यानि चार गुना हो चुकी थी । हालांकि लंदन में विशाल कारखाने नहीं थे फिर भी यह प्रवासियों को बड़ी संख्या में आकर्षित करने में सफल रहा । लंदन के पॉच प्रमुख उद्योगों में लंदन की गोदी के अलावा, (i) छपाई और स्टेशनरी उद्योग, (ii) परिधान और जूता उद्योग, (iii) धातु एवं इंजीनियरिंग उद्योग, (iv) लकड़ी व फर्नीचर उद्योग तथा (v) चिकित्सा उपकरण व घड़ी जैसे सटीक माप वाले उत्पादों और कीमती धातुओं की चीजें बनाने वाले उद्योग । बीसवीं शताब्दी में प्रथम विश्वयुद्ध के समय लंदन में मोटरकार और बिजली की उपकरणों का भी उत्पादन प्रारम्भ हुआ जिससे कि शहर की तीन चौथाई नौकरियॉ इन्हीं कारखानों में सीमित हो गई ।

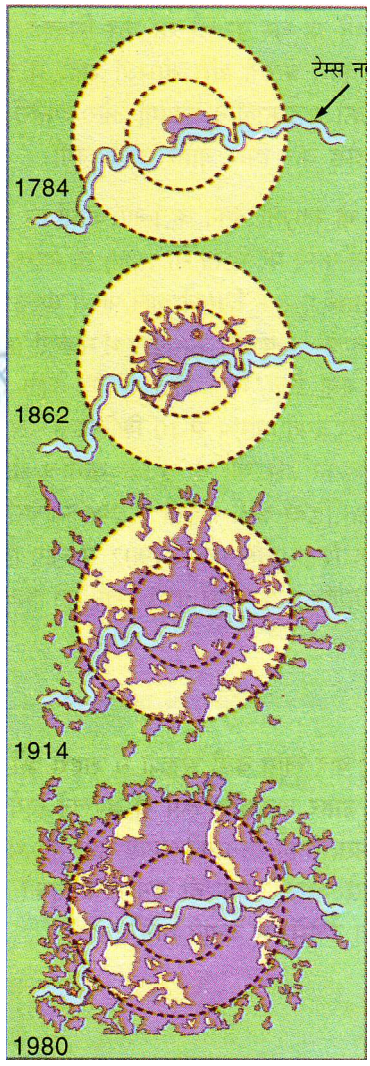

लंदन का फैलाव : चार अलग दौरों में लंदन की आबादी की दर्शाने वाला मानचित्र

महानगर–किसी प्रांत या देश का विशाल और घनी आबादी वाला शहर जो प्राय: वहॉ की राजधानी भी होता है।

उन्नीसवीं शताब्दी का लंदन क्लर्कों और दुकानदारों, छोटे पेशेवरों और निपुण कारीगरों, कुशल व शारीरिक श्रम करनेवालों की बढ़ती आबादी, सिपाहियों, नौकरों, दिहाड़ी मजदूरों, फेरीवालों और भिखारियों का शहर था ।

शहरों की ओर बढ़ते रुझान ने लंदन जैसे पुराने शहर के स्वरूप को भी बदल दिया। चूँकि यह शहर प्रवासियों का शहर बनता जा रहा था अत: इस घनी आबादी वाले शहर में इन नवागंतुकों के लिए सस्ते और सामान्यत: असुरक्षित आवास बनने लगे चूंकि कारखाने के मालिक प्रवासी कामगारों को रहने की जगह मुहैय्या नहीं कराते थे । प्रवजन का यह एक प्रमुख परिणाम पाया गया ।

टेनेमेंट्स : कामचलाऊ और अक्सर बेहिसाब भीड़ वाले अपार्टमेंट मकान। ऐसे मकान बड़े शहरों के गरीब इलाके में अधिक पाए जाते थे ।

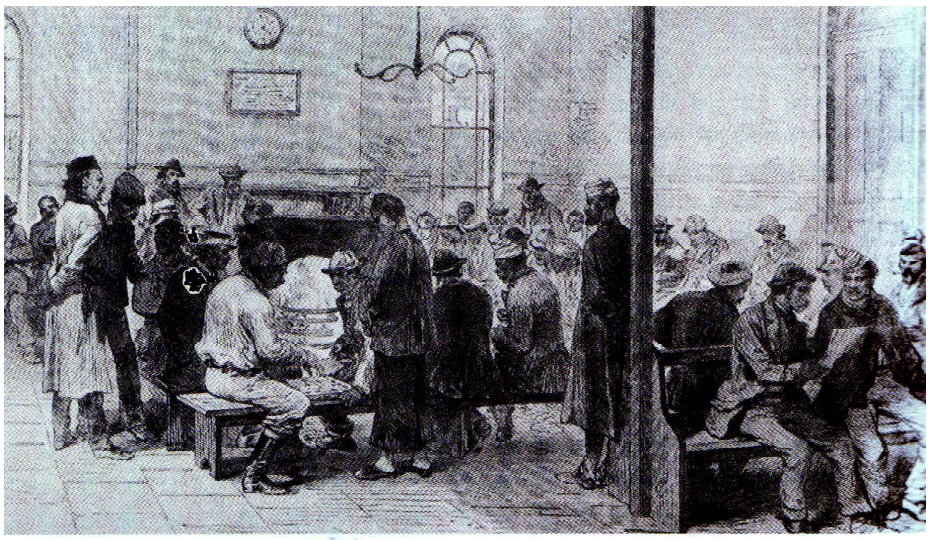

स्ट्रेंजर्स होम (अजनबियों का घर) दि-इलस्ट्रेटेड न्यूज-1870

बहुत सारे शहरों में खैराती संस्थाओं और स्थानीय शासन की ओर से जाड़ों में रैन बसेरे और अजनबी घरों की व्यवस्था की जाती थी । गरीब व्यक्ति भोजन, गर्माहट और आसरा की आशा में इन स्थानों पर बड़ी संख्या में एकत्रित होते थे ।

लंदन अगर एक ओर मनीषियों और धनी लोगों का शहर था तो दूसरा सत्य यह भी था कि ये अवसर केवल कुछ व्यक्तियों को ही प्राप्त थे जो सामाजिक तथा आर्थिक विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसंख्यक वर्ग थे जो पूर्णरूपेण उन्मुक्त तथा सन्तुष्ट जीवन जी सकते थे। चूँकि अधिकतर व्यक्ति जो शहरों में रहते थे, बाध्यताओं में ही सीमित थे तथा उन्हें सापेक्षिक स्वतंत्रता प्राप्त नही थी । अत: शहर का जीवन परस्पर विरोधी छवियों और अनुभवों को जन्म दे रहा था । अगर एक ओर संपन्नता थी तो दूसरी ओर गरीबी, एक तरफ बाह्य चमक दमक थी तो दूसरी ओर धूल और

अंधकार एक ओर अवसर थे तो दूसरी ओर निराशा थी । जैसे-जैसे लंदन विकसित हुआ वैसे ही कुछ नकारात्मक प्रवृत्तियों में भी वृद्धि हुई जैसे– जो अपराधों में वृद्धि हुई जिससे सामाजिक नैतिक मूल्यों का पतन हुआ । डेविड थॉम्सन के अनुसार इस औद्योगीकरण का सबसे बड़ा प्रभाव सामाजिक नैतिक मूल्यों में बदलाव लाया। 1870 ई. के दशक में लंदन में कम-से-कम बीस हजार अपराधी रहते थे । हेनरी मेह्यू के अनुसार एक ऐसी सूची बनी जहॉ लोग अपराधों से ही अपनी आजीविका चलाते थे। इसके अलावा 1861 की जनगणना ने घरेलू नौकरों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि होने की जानकारी प्रदान की जिनमें महिलाओं की संख्या अधिक थी । बाल मजदूरों की संख्या में भी वृद्धि हुई । 1870 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कानून और 1902 से लागू किए गए फैक्ट्री कानून के बाद बच्चों को औद्योगिक कामों से बाहर रखने की व्यवस्था कर दी गई ।

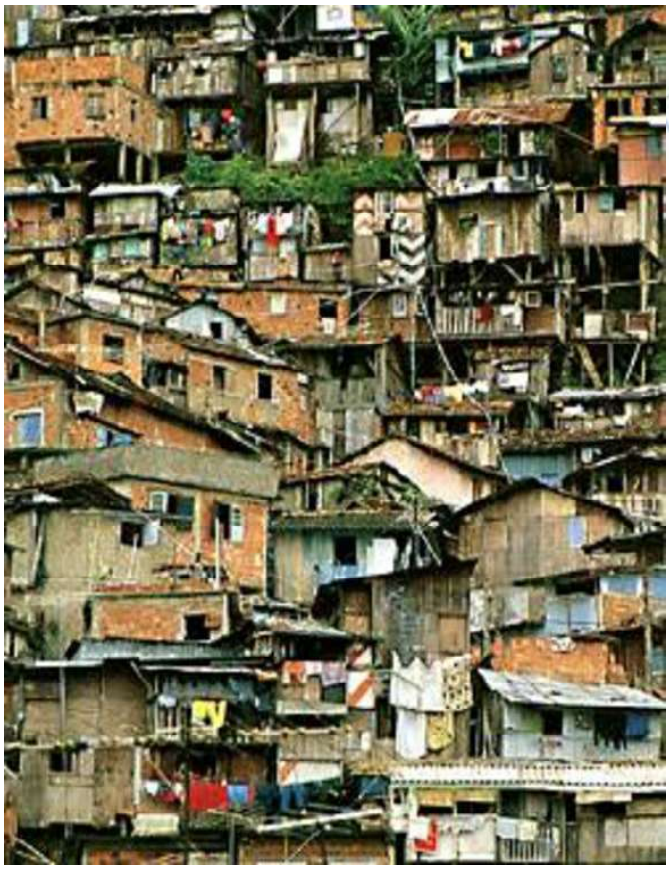

लंदन की एक झोपडपट्टी-1889 (बीसवीं शताब्दी के मजदूरों में आवासों का घनत्व एवं साफ सफाई कमी

शहरों में अगर एक ओर रोजगार था तो दूसरी ओर उसके सीमित रूप जहाँ अल्पकुशल मजदूरों को एक निर्धन वर्ग के रूप में उभरते हुए पाया गया जो झोपड़पट्टियों में गुजारा कर रहे थे । शहर के गरीबों के लिए आवास की सुविधा उपलब्ध कराने के उपाय किए जाने लगे। एक कमरे वाले मकानों को जनस्वास्थ्य के लिए खतरा माना गया चूँकि इनमें हवा निकासी का इन्तजाम नहीं था दूसरे इनमें आग लगने का खतरा बना रहता था और तीसरा इस विशाल जनसमूह के कारण सामाजिक उथल-पुथल की आशंका बनी रहती थी। इन आशंकाओं को दूर करने के उद्देश्य से मजदूरों के लिए आवासीय योजनाएँ शुरू की गई ।

लंदन की भीड़ भरी बस्तियों को कम करने, खुले स्थानों को हरा-भरा बनाने, आबादी कम करने और शहर को योजनानुसार बसाने की कोशिश की गई । लंदन का गिर्द हरित पट्टी विकसित करके देहात और शहर के दूरी को कम करने के उपाय किये गये। इस अवधारणा को वास्तुकार और योजनाकार एवेनेजर हावर्ड ने 'गार्डन सिटी' (बगीचों का शहर) का नाम दिया जिसमें साझा बाग-बगीचे लगाये गए पर ऐसे मकान केवल खाते पीते कामगार ही खरीद सकते थे ।

विश्वयुद्धों के दौरान (1919-39) मजदूर वर्ग के लिए आवास का इन्तजाम करने का उत्तरदायित्व ब्रिटिश राज्य ने लिया और स्थानीय शासन के द्वारा 10 लाख मकान बनाए गए जो छोटे परिवारों को ध्यान में रखकर निर्मित हुए । इस अवधि में शहर इतना फैल चुका था कि अब लोग पैदल अपने काम तक नहीं पहुँच सकते थे अत: शहर के आसपास यानि उपशहरी बस्तियों के अस्तित्व में आने से सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था अनिवार्य रूप से लगू की गई । देशिक जीवन क्षमता को आश्वस्त किया गया । संगठन एवं प्रबंधन द्वारा निवास तथा आवासीय पद्धति को विकसित किया गया, यातायात के साधन उपलब्ध कराये गए ताकि कर्मचारियों को बड़ी संख्या में कार्य स्थल तक पहुँचाया जा सके। जनस्वास्थ्य, स्वच्छता, जनसुरक्षा, पुलिस की आवश्यकता महसूस की गई ।

इस चित्र में न्यू अर्जविक, एक बगीचा उपशहर इसमें चारों तरफ से बंद हरे भरे स्थान के सहारे एक नया सामुदायिक जीवन विकसित हो रहा था जिसे रेमंड अनवित और वैरी पार्कर ने तैयार किया था ।

न्यू अर्जविक, एक बगीचा-उपशहर
ध्यान से दखिए कि इसमें चारों तरफ से बंद हरे-भरे स्थान के सहारे एक नया सामुदायिक जीवन विकसित हो रहा हे।

परिवहन व्यवस्था आवासीय क्षेत्रों के सापेक्ष औद्योगिक तथा वाणिज्यिक कार्यस्थलों से प्रभावित हुई जिससे वृहत् जन परिवहन प्रणाली का निर्माण हुआ । परिवहन व्यवस्था का नगर में काम करनेवालों की जीवन की गुणवत्ता पर सीधा प्रभाव पड़ा । जन-परिवहन के साधनों में परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन भी आया । शहरों में आवागमन की सुविधा बढ़ी। लंदन के भूमिगत

रेलवे ने आवास की समस्या को भी हल किया जिसके जरिये लोग भारी संख्या में शहर के विभिन्न छोर तक पहुँच सकते थे ।

दुनिया की सबसे पहली भूमिगत रेल के पहले खंड का उद्घाटन 10 जनवरी 1863 ई० को किया गया । यह रेल लाईन लंदन की पैडिंग्ल और कैरिंग्टन स्ट्रीट के बीच स्थित थी। पहले दिन ही यात्रियों की संख्या 10,000 तक थी । 1880 ई. तक भूमिगत रेल नेटवर्क का विस्तार हो चुका था जिसमें सालान चार करोड़ लोग यात्रा करते थे ।

चार्ल्स डिकेन्स ने 1848 में लिखा कि भूमिगत रेल के कारण मकान गिराए गए सड़कें बंद हुई लंदन के गरीबों को बड़ी संख्या में उजाड़ा गया पर इन अड़चनों के बावजूद भूमिगत रेलवे सफल हुई । बीसवीं शताब्दी के आने तक न्यूयार्क, टोकियो और शिकागो जैसे विशाल महानगर ने अपनी एक सुव्यवस्थित सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था स्थापित की जिसे लेकर उपनगरीय क्षेत्रों को जोड़ा जा सका ।

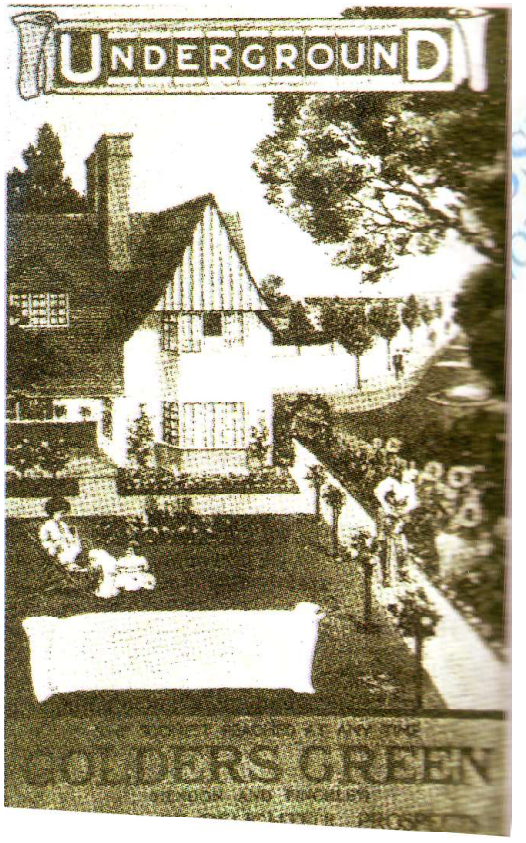

गोल्डर्स ग्रीन स्टेशन के लिए लंदन अंडरग्राउंड का विज्ञापन, सन१९०० के आसपास

इस चित्र में श्वासावरोधन-गोल्डर्स ग्रीन स्टेशन के लिए लंदन अंडरग्राउंड का विज्ञापन सन् 1900 के आसपास-विज्ञापन में लोगों को हरे-भरे, कम भीड़ वाले सुन्दर उपशहरी इलाकों में बसने के लिए प्रेरित किया जा रहा है ।

जन परिवहन के साधनों में परिवर्तन से शहरों में सामाजिक परिवर्तन भी आए । समर्थ, कार्यकुशल तथा सुरक्षित जन-परिवहन शहरी जीवन में भारी परिवर्त्तन लाए तथा शहरों की आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित किया जिससे सामाजिक व्यवस्था को भी एक नया आकार प्रदान किया गया।

सामाजिक बदलाव और शहरी जीवन :

शहरों का सामाजिक जीवन आधुनिकता के साथ अभिन्न रूप से जोड़ा जा सकता है। वास्तव में यह एक-दूसरे की अंर्तअभिव्यक्ति है । शहरों को आधुनिक व्यक्ति का प्रभाव क्षेत्र माना जाता है ।

व्यक्तिवाद

वह सिद्धांत जिससे समुदाय की नहीं बल्कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकार को स्वीकार किया जाता है।-७

सघन जनसंख्या के ये स्थल जहॉ कुछ मनीषियों के लिए अवसर प्रदान कराता है वहीं यथार्थ में यह अवसर केवल कुछ व्यक्तियों को ही प्राप्त होता है । परन्तु इन बाध्यताओं के बावजूद शहर 'समूह पहचान' के सिद्धान्त को आगे बढ़ाते हैं जो कई कारणों से जैसे–प्रजाति धर्म, नृजातीय, जाति, प्रदेश तथा समूह शहरी जीवन का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं। वास्तव में कम स्थान में अत्यधिक लोगों का जमाव, पहचान को और तीव्र करता है तथा उनमें एक ओर सहअस्तित्व की भावना उत्पन्न करता है तो दूसरी ओर प्रतिरोध का भाव। अगर एक ओर सह-अस्तित्व की भावना है तो दूसरी ओर पृथक्करण की प्रक्रिया जिसके परिणामस्वरूप मिश्रित प्रतिवेशी एकल समुदाय बदलने के उपाय में बदल गये । इस प्रकार मुहल्ले 'घेटो' कहलाये ।

घेटो–सामान्यत: यह शब्द मध्य यूरोपीय शहरों में यहूदियों की बस्ती के लिए प्रयोग किया जाता है । आज के संदर्भ में यह विशिष्ट धर्म, नृजाति, जाति या समान पहचान वाले लोगों के साथ रहने को इंगित करता है । घैरोकरण की प्रक्रिया में मिश्रित विशेषताओं वाले पड़ोस के स्थान पर एक समुदाय पड़ोस में बदलाव का होना, सामुदायिक दंगों को ये एक विशिष्ट देशिक रूप देते हैं ।

शहरों में नए सामाजिक समूह बने । सभी वर्ग के लोग बड़े शहरों की ओर बढ़ने लगे। शहरी सभ्यता ने पुरुषों के साथ महिलाओं में भी व्यक्तिवाद की भावना को उत्पन्न किया एवं परिवार की उपादेयता और स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया । जहॉ पारिवारिक सम्बन्ध अब तक बहुत मजबूत थे वहीं ये बंधन ढीले पड़ने लगे। एक ओर उनके अधिकारों के लिए आंदोलन चलाये गये । महिलाओं के मताधिकार आंदोलन या विवाहित महिलाओं के लिए संपत्ति में अधिकार आदि आंदलनों के माध्यम से महिलाएॅ लगभग 1870 ई. के बाद से राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा ले पाई । समाज में महिलाओं की स्थिति में भी परिवर्तन आए। उनके वैचारिक उद्‌भव को सांस्कृतिक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। आधुनिक काल में महिलाओं ने

समानता के लिए संघर्ष किया और समाज को कई रूपों में परिवर्तित करने में सहायता दी । ऐतिहासिक परिस्थितियॉ महिलाओं के संघर्ष के लिए कहीं सहायक सिद्ध हुई है तो कहीं बाधक । उदाहरण के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के समय पाश्चात्य देशों में महिलाओं ने कारखानों में काम करना प्रारंभ किया । एक दूसरे प्रकार का उदाहरण, जहाँ महिलाएँ अपनी अस्मिता में परिवर्तन लाने में सफल हुई वह क्षेत्र था उपभोक्ता विज्ञापन। अधिकतर शहरी समाज में महिलाएॅ घरेलू उपयोग के वस्तुओं का निर्णय लेती है अत: विज्ञापनों ने उपभोक्ता के रूप में महिलाओं की सोच के प्रति संवेदनशील बनाया ।

शहरों की बढ़ती आबादी के साथ उन्नीसवीं शताब्दी में अधिकतर आंदोलन जैसे चार्टिड़ग (सभी व्यस्क पुरुषों के लिए चलाया गया आंदोलन) दस घंटे का आंदोलन (कारखानों में काम के घंटे निश्चित करने के लिए चला आंदोलन) में पुरुष भी बड़ी संख्या में एकजुट हुए व्यवसायी वर्ग-नगरों के उद्‌भव का एक प्रमुख कारण व्यावसायिक पूँजीवाद के उदय के साथ संभव हुआ । व्यापक स्तर पर व्यवसाय, बड़े पैमाने पर उत्पादन, मुद्राप्रधान अर्थव्यवस्था, शहरी अर्थव्यवस्था जिसमें काम के बदले वेतन, मजदूरी का नगद भुगतान, एक गतिशील एवं प्रतियोगी अर्थव्यवस्था, स्वतंत्र उद्यम, मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति, मुद्रा, बैंकिंग, साख बिल का विनिमय, बीमा, अनुबंध कम्पनी साझेदारी, ज्वाएंट स्टॉक, एकाधिकार आदि इस पूंजीवादी व्यवस्था की विशेषता रही। यह एक नए सामाजिक शक्ति के रूप में उभर कर आए ।

लैसेज फेयर : आर्थिक उन्मुक्तवाद था जिसमें सरकार का किसी रूप में हस्तक्षेप नहीं था एवं पूंजीपतियों को पूरी स्वतंत्रता थी ।

नये मिल मालिक वास्तव में पहले औद्योगिक पूंजीपति थे । इन्होंने सम्पदा, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव स्वयं अपनी सूझबूझ, दूरदर्शिता एवं अध्यवसाय से अर्जित की थी । इस वर्ग का प्रभाव विशेषकर इंग्लैंड की राजनीति पर पड़ा ।

मध्यम वर्ग–शहरों के उद्‌भव ने मध्यमवर्ग को भी शक्तिशाली बनाया । एक नए शिक्षित वर्ग का अभ्युदय जहॉ विभिन्न पेशों में रहकर भी औसतन एक समान आय प्राप्त करनेवाले वर्ग के रूप में उभर कर आए एवं बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में स्वीकार किए गए। यह विभिन्न रूप में कार्यरत रहे जैसे शिक्षक, वकील, चिकित्सक, इंजीनियर, क्लर्क, एकाउंटेंट्स परन्तु इनके जीवन मूल्य के आदर्श समान रहे और इनकी आर्थिक स्थिति भी एक वेतनभोगी वर्ग के रूप में उभर कर आई ।

© DSTBRC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

श्रमिक वर्ग :

आधुनिक शहरों में जहॉ एक ओर पूँजीपति वर्ग का अभ्युदय हुआ तो दूसरी ओर श्रमिक वर्ग। सामंती व्यवस्था के अनुरूप विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के द्वारा सर्वहारा वर्ग का शोषण प्रारम्भ हुआ जिसके परिणामस्वरूप शहरों में दो परस्पर विरोधी वर्ग उभर कर आए। शहरों में फैक्टरी प्रणाली की स्थापना के कारण कृषक वर्ग, जो लगभग भूमि विहीन कृषि वर्ग के रूप में थे, शहरों की ओर बेहतर रोजगार के अवसर को देखते हुए भारी संख्या में शहरों की ओर इनका पलायन हुआ । इसी क्रम में नए औद्योगिक नगर जैसे मैनचेस्टर, लंकाशायर, शेकिन्ड आदि अस्तितव में आए । इन शहरों में श्रमिकों की संख्या अधिक थी। चूंकि लोक कल्याण के भावना की कमी थी अत: इन शहरों में नई समस्याओं को जन्म दिया जैसे बेरोजगारी में वृद्धि, स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों के प्रति उदासीनता, अत: श्रमिक वर्ग ने अपने हितों की सुरक्षा के लिए श्रमिक संघ कायम किए । बाद में संसद के द्वारा कुछ फैक्टरी नियम बनाए गए । इंग्लैंड में 1825 में सरकार को मजदूरों के वेतन बढ़ाने तथा काम के घंटे कम करवाने के लिए तथा संगठित ढंग से काम करने का अधि कार स्वीकार करना पड़ा। चूँकि इन नियमों का पालन नहीं हुआ अत: श्रमिकों की दशा में सुधार नहीं लाया जा सका जिसे लेकर मजदूर आंदोलन तीव्र हुआ और वे ट्रेड यूनियन बनाकर अपने को संगठित करने लगे।

औपनिवेशिक भारतीय शहर–बम्बई :

पश्चिमी यूरोपीय शहरों के विपरीत भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया धीमी रही। बीसवीं शताब्दी के शुरुआत में केवल 11 प्रतिशत लोग शहरों में रहते थे जिनमें एक बड़ी संख्या विशाल प्रेसीडेंसी शहरों में रहती थी, जो विशाल एवं बहुउपयोगी थे । इन शहरों में बड़े बन्दरगाह, वेयरहाउस, सेना की छावनियाँ, शैक्षणिक संस्थान, संग्रहालय व पुस्तकालय थे । बंबई भारत का एक प्रमुख शहर था । उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक बम्बई का विस्तार तीव्रता से हुआ । शुरुआत में बम्बई सात टापुओं का इलाका था । जैसे-जैसे आबादी बढ़ी, इन टापुओं को एक-दूसरे से जोड़ दिया गया ताकि ज्यादा जगह पैदा की जा सके। और इस तरह एक विशाल शहर अस्तित्व में आया। बम्बई औपनिवेशिक भारत की वाणिज्यिक राजधानी थी। एक प्रमुख बंदरगाह होने के नाते यह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र था जहॉ से कपास और अफीम जैसे कच्चे माल बड़ी तादाद में रवाना किए जाते थे। इस व्यापार के कारण न सिर्फ व्यापारी और महाजन बल्कि कारीगर एवं

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

दुकानदार भी बम्बई में बसे। कपड़ा मिलें खुलने पर और अधिक संख्या में लोग इस शहर की ओर उन्मुख हुए। 1854 ई. में पहला कपड़ा मिल स्थापित हुआ और 1921 ई. तक वहाॅ 85 कपड़ा मिलें खुल चुकी थी जिनमें लगभग 1,46,000 मजदूर काम कर रहे थे। 1931 तक लगभग एक चौथाई ही बम्बई के निवासी थे बाकी निवासी बाहर से आकर बसे थे।

१९३० में बम्बई का मानचित्र जसमें सात टापुओं और विकसित की गई जमीन को देखा जा सकता है।

©BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

लंदन की तरह बम्बई भी घनी आबादी वाला शहर है। 1840 में लंदन का क्षेत्रपुल प्रति व्यक्ति 155 वर्ग गज था जबकि बम्बई का प्रति व्यक्ति क्षेत्रफल केवल 9.5 वर्ग गज था। 1872 में लंदन में प्रति मकान में औसतन 8 व्यक्ति रहते थे जबकि बम्बई में प्रति मकान में 20 व्यक्ति रहते थे।

बम्बई का विकास सुनियोजित रूप से नहीं हो सका। बल्कि 1800 के आसपास बम्बई फोर्ट एरिया शहर का केन्द्र था और दो हिस्सों में बॅटा हुआ था। एक हिस्से में 'नेटिव' रहते थे और दूसरे हिस्से में यूरोपीय या 'गोरे' रहते थे। कोर्ट आबादी के उत्तर में एक यूरोपीय उपनगर और औद्योगिक पट्टी भी विकसित होने लगी थी। दक्षिण में इसी तरह की उपनगरीय आबादी और एक छावनी थी। यह नस्ली विभाजन अन्य प्रसीडेंसी शहरों में भी रही।

शहर के अनियोजित विस्तार के कारण 1850 तक शहर में आवास और जलापूर्ति की समस्या बढ़ चुकी थी। कपड़ा मिलों के चलने से अधिक लोग बम्बई आकर बसने लगे जिससे बम्बई के आवासीय इलाकों पर दबाब बढ़ गया जिससे बम्बई की 70 प्रतिशत लोग घनी आबादी वाले चॉलों में रहते थे। बम्बई की चाल बहुमंजिला इमारत होती थी। लंदन केटिनेमेंट्स की तरह ये मकान भी मोटे तौर पर व्यापारी और महाजन की निजी संपत्ति होते थे। बाहर से आने वाले

लोगों की आवासीय जरूरत को पूरा करते थे परन्तु ये मात्र कमरों की कतारें होती थी जिनमें अलग शौचालय की व्यवस्था नहीं थी ।

लंदन में नगर योजना का काम सामाजिक क्रांति के भय से शुरू किया गया तो बम्बई में यह काम प्लेग की महामारी के डर से शुरू किया । 1898 में सिटी ऑफ बॉम्बे इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट की स्थापना की गई । 1918 में बंबई के मकानों के महंगे किराये को सीमित करने के लिए किराया कानून पारित किया गया परन्तु इससे आवासीय समस्या समाप्त नहीं हुई। जमीन की कमी के कारण भी शहर के विस्तार से बम्बई में समस्या बढ़ी जिसे दूर करने के लिए भूमि विकास परियोजन लागू की गई । इस दिशा में सबसे पहली परियोजना 1784 में शुरू की गई थी । बम्बई के गवर्नर विलियम हॉर्नवी ने उस समय विशाल तटीय दीवार बनाने के प्रस्ताव पर मंजूरी दी ताकि शहर के निचले इलाके समुद्र के पानी की चपेट में आने से बच जाएँ ।

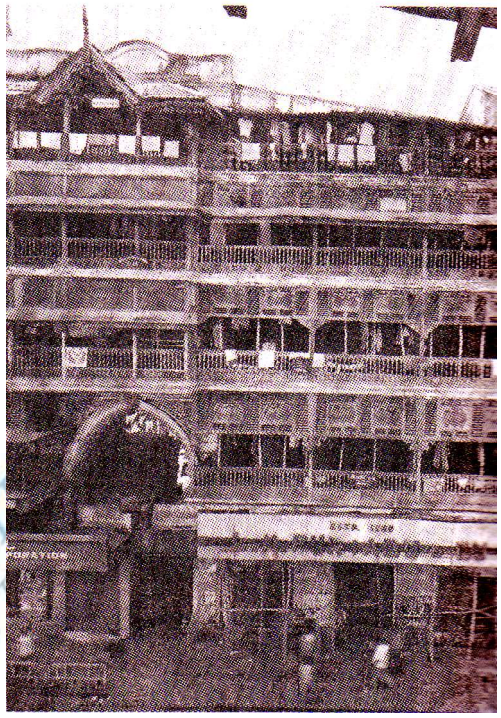

बीसवीं सदी की शुरूआत में कलाबादेवी रोड के पास बनाई गई चॉल

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए और अधिक जमीन की जरूरत महसूस हुई तो सरकार और निजी कम्पनियों के द्वारा नयी योजनाएँ बनाई गई। 1864 में मालाबार हिल से कोलबा के आखिरी छोर तक के पश्चिमी तट का विकसित करने का ठेका बैंक` बेरिक्लेमेशन कम्पनी को मिला । बीसवीं शताब्दी के आने तक जिस प्रकार आबादी तेजी से बढ़ी, अधिक से अधिक जमीन को घेर लिया गया और समुद्री जमीन को विकसित किया जाने लगा ।

भूमि विकास

दलदली अथवा डूबी हुई जमीन कोरहने या खेती करने या किसी अन्य काम के योग्य बनाना

एक सफल भूमि विकास परियोजना बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट के अन्तर्गत शुरू की गई। ट्रस्ट ने 1914 से 1918 के बीच एक सूखी गोदी का निर्माण किया और उसकी खुदाई से जो मिट्टी निकली उसका इस्तेमाल करके 22 एकड़ का बालार्ड एस्टेट बना

डाला। इसके बाद मशहूर मरीन ड्राईव बनाया गया । बम्बई में आने वाले अप्रवासियों और उनके दैनिक जीवन में कठिनाई जिसका सामना आम आदमी को करना पड़ता है । निष्कर्षत: शहर के अन्तर्विरोध के बावजूद शहर ऐसे लोगों को हमेशा आकर्षित करती है जो स्वतंत्रता और नए अवसर की तलाश करते हैं जिससे इन शहरों को सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता मिलती है।

मारीन ड्राईव बंम्बई का यह प्रसिद्ध स्थान बीसवीं शताब्दी में समुद्र जमीन को विकसित करके बनाया गया।

सिंगापुर शहर का विकास :

एशियाई देशों के सभी शहर अनियोजित और बेतरतीब ढंग से विकसित नहीं हुए थे। कई शहर योजनाबद्ध रूप से तैयार की गई । ली कुआन येव का सिंगापुर एक प्रमुख उदाहरण है । आज का सिंगापुर एक सुनियोजित शहर है जो विश्व भर में नगर विकास के आदर्श को प्रस्तुत करता है । 1965 तक सिंगापुर एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह तो था लेकिन वह बाकी एशियाई शहरों जैसा ही था। इस शहर का निर्माण तो श्वेत बस्तियों के हिसाब से ही बसाया गया था। सिंगापुर पर उस समय श्वेतों का ही शासन था । शहर की ज्यादातर आबादी भीड़ भरी गंदे मकानों और गंदगी में जीते थे।

सिंगापुर मरीन

1965 में पीपुल्स एक्शन पार्टी के अध्यक्ष

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

ली कुआन येव के नेतृत्व में जब सिंगापुर को आजादी मिली तब एक विशाल आवास एवं विकास कार्यक्रम शुरू किया गया जिसने इस द्वीप राष्ट्र को एक नया आयाम दिया । सरकार के द्वारा लगभग 86 फीसदी जनता को अच्छे मकान दिए गए जिससे सरकार को इनका समर्थन प्राप्त हुआ । ऊंचे आवासीय खंडों में हवा निकासी और सभी प्रकार की सेवाओं का इंतजाम किया गया। इन इमारतों ने शहर के सामाजिक जीवन को भी बदल दिया । बाहरी गलियरों के कारण अपराध कम हुए, सामुदायिक कार्यक्रमों के लिए इन इमारतों में खाली मंजिलें छोड़ दी गई थीं ।

शहर में लोगों के आने पर नियंत्रण रखा जाने लगा । भारतीय, चीनी और मलय इन तीनों समुदायों के बीच नस्ली सामाजिक टकरावों को रोकने के लिए सामाजिक संबंधों पर भी लगातार

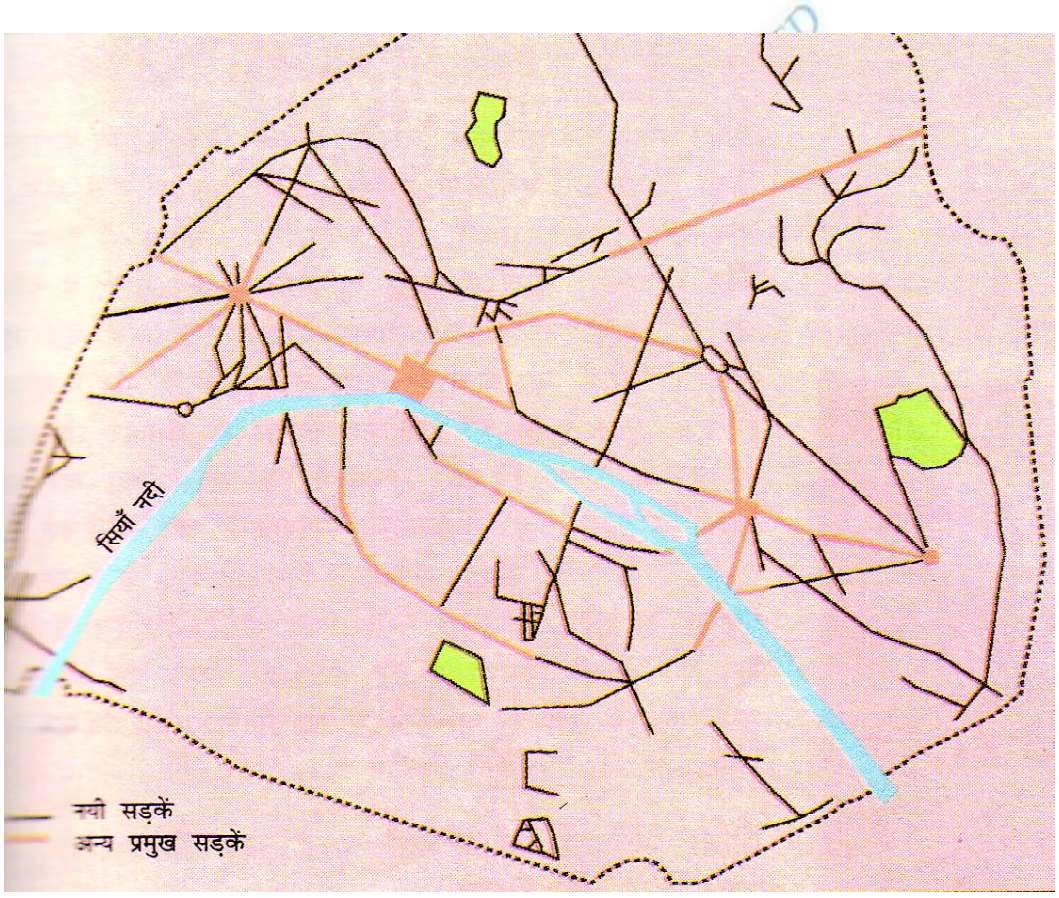

चित्र-११ : बैरॉन हॉसमान द्वारा १८५० से १८७० के बीच बनवाई गई पेरिस की प्रधान सड़कों की येाजना

सचेत रहने के उपाय किए गए । अखबार, पत्रिका और अन्य प्रकार के संचार साधनों पर कड़ा नियंत्रण रखा गया ।

हालांकि सिंगापुर के नागरिकों को भौतिक सुविधाएँ और संपन्नता मिली लेकिन यह मान्यता भी है कि इस शहर में जीवंत और चुनौतीपूर्ण राजनीतिक संस्कृति की कमी है। जिस प्रकार से बेरॉन हॉसमान ने पेरिस के पुनर्निर्माण का काम किया । वह शहरीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। शहर भर में सीधी, चौड़ी सड़कें या बुलेवर्ड्स (छायादार सड़क) बनाई गई, खुले मैदान बनाये गए और पेड़-पौधे, बागीचे लगाए गए, पूरे शहर में पुलिस को तैनात किया गया । 1860 तक पेरिस के प्रत्येक पॉच कामकाजी लोगों में से एक निर्माण कार्यों में लगाया गया । पर इस पुर्निर्माण अभियान में पेरिस के बीच रहने वाले 350,000 लोगों को उजाड़ दिया गया था। पेरिस के कुछ संपन्न निवासियों को भी लगता था कि उनके शहर को दानवी रूप से बदल दिया गया था । पर जल्द ही यह भावना गर्व में बदल गई जब पेरिस एक ऐसी राजधानी के रूप में जाना गया जो सिर्फ वास्तुशिल्प के लिए नहीं बल्कि सामाजिक और बौद्धिक प्रगति के केन्द्र के रूप में एक प्रभावशाली स्थान बना सका ।

पाटलीपुत्र (पटना) :

हमारे राज्य में पटना नगर का विकास शहरीकरण की इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्राचीनकाल में पाटलीपुत्र के नाम से विख्यात यह एक महानगर था जिसकी तुलना विश्व के समकालीन सुप्रसिद्ध नगरों से की जाती थी। इसकी स्थापना छठी शताब्दी ई०पू० में मगध के शासक अजातशत्रु के द्वारा एक सैनिक शिविर के रूप में की गई थी। कालान्तर में यह मगध साम्राज्य की राजधानी बना। मौर्य शासनकाल के कंधार से कर्नाटक तक विस्तृत साम्राज्य की राजधानी इसी पाटलीपुत्र नगर में स्थित थी। मौर्यकालीन राज-प्रसाद के अवशेष दक्षिण पटना में स्थित कुम्हरार से प्राप्त हुए हैं। इस नगर की आबादी उस समय लगभग 4 लाख थी। इस नगर के प्रशासन और जीवन के अनेक पहलुओं की विस्तृत चर्चा मेगास्थिनीज की रचना इन्डिका में उपलब्ध है। यह व्यक्ति चन्द्रगुप्त के दरबार में दूत के रूप में आया था।

गोलघर

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

गुप्त काल में भी इस नगर का गौरव बना रहा। इसके विशाल भवनों के वैभव और सौन्दर्य की चर्चा चीनी यात्री फा-हियान द्वारा की गई है। प्राचनी काल में यह नगर शिल्प कला, व्यापार, शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था परन्तु यह नगर पूर्व मध्यकाल में पतनशील अवस्था में आ गया।

गंगा नदी किनारे बसा पटना शहर

मध्य युग में इस नगर के गौरव को सुप्रसिद्ध अफगान शासक शेरशाह सूरी ने पुनर्स्थापित किया। उसने 1541 ई० के लगभग गंगा और गंडक नदी के संगम के पास एक दुर्ग बनवाया क्योंकि इस स्थान के सैनिक महत्व का उसे आभास था। अब्दुल्लाह की रचना तारीखे दाऊदी में इस संबंध में विस्तृत जानकारी मिलती है। अकबर के शासन काल तक यह नगर एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बन चुका था। 1856 ई० में अंग्रेज यात्री राल्फ फिच ने इस नगर का भ्रमण किया और बताया कि यहाँ से कपास, सूती वस्त्र, चीनी और अफीम का व्यापार बड़ी मात्रा में बंगाल एवं दूसरे क्षेत्रों के साथ होता था। इसके अतिरिक्त शोरा और नील का भी निर्यात अधिक मात्रा में पटना से होता था। यूरोपीय व्यापारियों के साथ पंजाब के खत्री और पश्चिमी भारत के जैन व्यापारी और ईरानी, मध्य एशियाई एवं आरमिनयाई व्यापारी भी इस नगर में सक्रिय थे। 17वीं एवं 18वीं शताब्दियों में इस नगर की आबादी 3 लाख से अधिक बताई जाती है जब कि समकालीन यूरोप में एक लाख की आबादी वाले नगर भी महत्वपूर्ण माने जाते थे। मुगल काल में अनेक सुन्दर और भव्य इमारतों का यहाँ निर्माण भी हुआ जिनमें अधिकतर अब नगर के मध्य एवं पूरबी भागों में देखी जा सकती है। इसी नगर में 1666 ई० में सिखो के दसवें और अन्तिम गुरू श्री गोविन्द सिंह जी का जन्म हुआ जिस कारण यह नगर एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल भी माना जाता है।

18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मुगल राजकुमार अजीमुशान ने इस नगर का नव निर्माण कराया और इसे अजीमाबाद नाम दिया। उस समय इस नगर के पुनर्निर्माण पर लगभग एक करोड़ रूपयों का व्यय हुआ। तब यह नगर भारत के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्रों में अग्रणीय था।

18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पूरबी भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के साथ आधुनिक पटना नगर के विकास का क्रम आरम्भ हुआ। अजीमाबाद क्षेत्र से कुछ पश्चिम में अंग्रेजों का

अफीम गुदाम पहले ही से स्थित था। यहाँ से लगभग पांच मील की दूरी पर अनाज भण्डारण के लिए गुदाम का निर्माण 1786 ई० में किया गया जो आज गोलघर के नाम से विख्यात है। इन्हीं दोनों के बीच के क्षेत्र में पटना के आधुनिक नगर का विकास आरम्भ हुआ।

पटना नगर के प्रशासन की व्यवस्था भी क्रमिक ढंग से विकसित हुई और 1769 ई० में बिहार क्षेत्र के शासन की देखरेख के लिए एक अंग्रेज निरीक्षक की नियुक्ति हुई, जब कि 1774 ई० में रेगुलेटिंग एक्ट के अन्तर्गत बिहार के प्रशासन के लिए कई व्यवस्था लागू हुई। इसमें पटना के नगर की केन्द्रीय स्थिति बनी रही।

1911 ई० के दिल्ली दरबार में बिहार को पृथक राज्य का रूप दिया गया। 1912 ई० में बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से पृथक राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ और पटना इसकी राजधानी बनी। 19वीं एवं 20वीं शताब्दी में पटना के पश्चिमी भाग का विकास आरम्भ हुआ और नया प्रशासनिक क्षेत्र विकसित हुआ जिसमें राजभवन, सचिवालय, विधान मण्डल आदि का निर्माण हुआ।

देश की स्वतंत्रता के बाद पटना के दक्षिण के दिशा में भी आबादी का विस्तार तेजी से हुआ है। वर्त्तमान पटना की आबादी 12 लाख से अधिक है और इसका क्षेत्र 250 वर्ग कि०मी० है। कोलकाता के बाद यह पूर्वी भारत का सबसे बड़ा नगर है और अबादी के घनत्व के दृष्टिकोण से यह भारत का 14वाँ सर्वाधिक आबादी वाला नगर है। वर्त्तमान में यह शिक्षा और व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र है और सांस्कृतिक क्रिया कलापों में भी इसकी स्थिति प्रशंसनीय है।

शहरीकरण की प्रक्रिया बहुत लम्बी रही है । ग्रामीण एवं सामंती व्यवस्था से हटकर कृषि व्यवस्था से आगे बढ़ते हुए एक नई आर्थिक व्यवस्था लागू हुई जिसने व्यापार, वाणिज्य उद्योग के विकास पर बल दिया । शहरों के इस विकासक्रम ने लोगों को नई चेतना प्रदान की और सुविध एॅं दी, तो दूसरी ओर नई समस्याओं को भी जन्म दिया जिनके निदान की आवश्यकता आज है। इस नई सामाजिक संरचना के अन्तर्गत शहरों के द्वारा जहॉ एक ओर व्यवसायी मध्यम एवं श्रमिक वर्ग आये तो उनके साथ वर्गभेद की भावना भी आई जो समाजवादी विचारधारा के विपरीत है एवं लोकतांत्रिक पद्धति को भी प्रभावित करती है । शहरों की निरन्तर प्रगति एवं इनके विस्तार से हमारी जीवन शैली सकारात्मक रूप से प्रभावित हुई है शिक्षा एवं रोजगार के बेहतर साधन उपलब्ध हुए हैं तो दूसरी ओर स्पर्धा एवं अवसरवाद जैसी नकारात्मक प्रवृति भी बलवती हुई है । एक संतुलित सामाजिक व्यवस्था का निर्माण आधुनिकीकरण के साथ उन आदर्शों के संश्लेषण के साथ ही संभव है जिन्हें हम शहरी व्यस्तता के अन्तर्गत छोड़ते जा रहे हैं ।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सामंती व्यवस्था से हटकर किस प्रकार की शहरी व्यवस्था की प्रवृत्ति बढ़ी ?

   (i) प्रगतिशील प्रवृति (ii) आक्रामक प्रवृति

   (iii) रूढ़िवादी प्रवृति (iv) शोषणकारी प्रवृति

2. शहर को आधुनिक व्यक्ति का किस प्रकार का क्षेत्र माना जाता है ?

   (i) सीमित क्षेत्र (ii) प्रभाव क्षेत्र

   (iii) विस्तृत क्षेत्र (iv) अथवा सभी

3. स्थायी कृषि के प्रभाव से कैसा जमाव संभव हुआ ?

   (i) संपत्ति (ii) ज्ञान

   (iii) शांति (iv) बहुमूल्य धातु

4. एक प्रतियोगी एवं उद्यमी प्रवृति से प्रेरित किस प्रकार की अर्थव्यवस्था लागू की गई ?

   (i) जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था (ii) मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था

   (iii) शिथिल अर्थव्यवस्था (iv) एवं सभी

5. आधुनिक काल में औद्योगीकरण ने किसके स्वरूप को गहन रूप से प्रभावित किया ?

   (i) ग्रामीणकरण (ii) शहरीकरण

   (iii) कस्बों (iv) बन्दरगाहों

6. जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक कहॉ होता है ?

   (i) ग्राम (ii) कस्बा

   (iii) नगर (iv) महानगर

7. 1810 से 1880 ई. तक लंदन की आबादी 10 लाख से बढ़कर कहॉ तक पहुँची ?

   (i) 20 लाख (ii) 30 लाख

   (iii) 40 लाख (iv) 50 लाख

© NCERT NOT TO BE PUBLISHED
WEB COPY

8. लंदन में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कब लागू हुई ?

(i) 1850 (ii) 1855

(iii) 1860 (iv) 1870

9. कौन सा सामाजिक वर्ग बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में उभर कर आया ?

(i) उद्योगपति वर्ग (ii) पूंजीपति वर्ग

(iii) श्रमिकवर्ग (iv) मध्यम वर्ग

10. पूंजीपति वर्ग के द्वारा किस वर्ग का शोषण हुआ ?

(i) श्रमिक वर्ग (ii) मध्यम वर्ग

(iii) कृषक वर्ग (iv) सभी वर्ग

रिक्त स्थानों को भरें–

1. शहरो के विस्तार में भव्य ..... का निर्माण हुआ ।
2. लंदन भारी संख्या में ..... को अकर्षिक करने में सफल हुई ।
3. शहरों में रहने वाले ..... से सीमित थे ।
4. ..... देशों में नगरों के प्रति रुझान देखा जाता है ।
5. ..... के द्वारा निवास तथा आवासीय पद्धति, जन यातायात के साधन, जन स्वास्थ्य इत्यादि के उपाय किये गये ।

समूहों का मिलान :

1.	मैनचेस्टर लंकाशायर शेफिल्ड	1. नगर
2.	चिकित्सक	2. वाणिज्यिक राजधानी
3.	प्रतियोगी मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था	3. बेरॉन हॉसमान
4.	बम्बई	4. मध्यम वर्ग
5.	पेरिस	5. औद्योगिक नगर

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. किन तीन प्रक्रियाओं के द्वारा आधुनिक शहरों की स्थापना निर्णायक रूप से हुई ?
2. समाज का वर्गीकरण ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में किस भिन्नता के आधार पर किया जाता है?
3. आर्थिक तथा प्रशासनिक संदर्भ में ग्रामीण तथा नगरीय बनावट के दो प्रमुख आधार क्या हैं ?
4. गांव के कृषिजन्य आर्थिक क्रियाकलापों की विशेषता को दर्शायें ।
5. शहर किस प्रकार के क्रियाओं के केन्द्र होते हैं ?
6. नगरीय जीवन एवं आधुनिकता एक-दूसरे से अभिन्न रूप से कैसे जुड़े हुए हैं ?
7. नगरों में विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग अल्पसंख्यक है ऐसी मान्यता क्यों बनी है ?
8. नागरिक अधिकारों के प्रति एक नई चेतना किस प्रकार के आंदोलन या प्रयास से बने ?
9. व्यावसायिक पूंजीवाद ने किस प्रकार नगरों के उद्‌भव में अपना योगदान दिया ?
10. शहरों के उद्‌भव में मध्यम वर्ग की भूमिका किस प्रकार की रही ?
11. श्रमिक वर्ग का आगमन शहरों में किस परिस्थितियों के अन्तर्गत हुआ ?
12. शहरों ने किन नई समस्याओं को जन्म दिया ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शहरों के विकास की पृष्ठभूमि एवं उसके प्रक्रिया पर प्रकाश डालें ।
2. ग्रामीण तथा नगरीय जीवन के बीच की भिन्नता को स्पष्ट करें ।
3. शहरी जीवन में किस प्रकार के सामाजिक बदलाव आए ।
4. शहरीकरण की प्रक्रिया में व्यवसायी वर्ग, मध्यमवर्ग एवं मजदूर वर्ग की भूमिका की चर्चा करें ।
5. एक औपनिवेशिक शहर के रूप में बम्बई शहर के विकास की समीक्षा करें ।

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

परियोजना कार्य :

1. अपने शहर में पॉच तरह के इमारतों को चुनिए । प्रत्येक के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए, उन्हें बनाने का निर्णय क्यों लिया गया ? उनके लिए संसाधनों की व्यवस्था केसे की गई, उनके निर्माण का उत्तरदायित्व किसे सौंपा गया ? इन इमारतों के स्थापत्य संबंधी आयामों का वर्णन कीजिए और औपनिवेशिक स्थापत्य से उनकी समानताओं या भिन्नताओं को चिन्हित कीजिए ।

2. जानकारी प्राप्त कीजिए कि आपके शहर में स्थानीय प्रशासन कौन-सी सेवाएं प्रदान करता है ? क्या जलापूर्ति, आवास, यातायात और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि सेवाएं भी उन्हीं के द्वारा प्रदान की जाती है । इन सेवाओं के लिए संसाधनों की व्यवस्था कैसे की जती है ? नीतियॉ किस प्रकार की होती है ?

© BSTBPC
WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED